(1) Dr. HONEY SINHA
(Assistant Professor)
Dept. of Commerce
Sub: Money And Banking
Paper: Subsidiary Paper
SNSRKS College, Saharsa

* B.Com Part IInd

* Introduction

** Measures to Control Deflation **
(मुद्रा संकुचन पर नियंत्रण के उपाय)

सरकार द्वारा अर्थात मुद्रा-संकुचन को नियंत्रित करने के लिए निम्नांकित उपाय उपयोग में लाए जा सकते हैं:

(A) सरकार द्वारा नीति सम्बन्धी उपाय (Policy measures by the Govt) सरकार द्वारा विस्फीति से छुटकारा पाने के लिए अनेक कार्य किए जा सकते हैं:

1) नये निर्माण कार्य (New Public Work) – सरकार सड़क, ताल, नहर, आदि के निर्माण का कार्य प्रारंभ कर सकती है। इससे अनेक व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त हो जाता है और उनकी आय में वृद्धि हो जाती है। फलत: जनता द्वारा वस्तुओं की माँग में वृद्धि हो जाती है और विस्फीति का प्रभाव कम होने लगता है।

2) ऋणों की वापसी (Refund of Loans) – सरकार अपने द्वारा लिये गये ऋणों को भी लौटाने लगती है जिससे जनता तथा बैंकों के पास धनराशि की वृद्धि हो जाती है। इस प्रकार समाज में नई मुद्रा चलन में आने से भी विस्फीति का प्रभाव कम होता है।

3) आर्थिक सहायता (Subsidy) – विस्फीति काल में सरकार प्राय: अनेक उद्योगों की स्थापना के लिए पूँजी अथवा ऋण की सहायता देने लगती है ताकि जनता को रोजगार उपलब्ध हो। और आय में वृद्धि हो। इससे भी संकुचन का प्रभाव कम होता है।

4) करों में छूट (Exemption from taxes) – मुद्रा-संकुचन का प्रभाव कम करने की दृष्टि से सरकार अनेक क्षेत्रों में करों की मात्रा कम कर देती है ताकि जनता के पास उपभोग के लिए अधिक क्रय शक्ति

हो और वह अधिक वस्तुओं की माँग कर सके।

5) निर्यातों को प्रोत्साहन (Promotion of Exports) - विस्फीति काल में अतिरिक्त वस्तुओं की मात्रा कम करने के लिए सरकार निर्यात सम्वर्द्धन के लिए योजना बना सकती है। इसके अंतर्गत निर्यातों पर सस्ते ऋण, आर्थिक सहायता आदि देने का प्रबंध किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त माल विदेशों को चला जाता है और मूल्य-स्तर सामान्य हो जाता है।

6) सरकार द्वारा माल की खरीद (Government Purchases) - माल का निर्यात करने के अतिरिक्त सरकार द्वारा अतिरिक्त माल खरीदा जा सकता है ताकि उसके मूल्यों में कमी न हो। वह माल दूसरे देशों को ऋण के रूप में दिया जा सकता है। अमेरिका द्वारा पी.एल-480 के विक्रय इसके उदाहरण हैं।

7) विदेशी पूँजी को प्रोत्साहन (Encouragement to Foreign Capital) - सरकार द्वारा विदेशियों को पूँजी विनियोग में प्रोत्साहन देने से भी विस्फीति का प्रभाव कम हो जाता है क्योंकि नई पूँजी बाजार में आने से संकुचन की स्थिति में सुधार होना स्वाभाविक है।

(B) मौद्रिक उपाय (Monetary Measures)
मुद्रा-संकुचन की स्थिति को ठीक करने के लिए केन्द्रीय बैंक मुद्रा तथा साख नीति को उदार बना सकता है। इन नीति में निम्नांकित परिवर्तन किए जा सकते हैं।

1) अधिक मुद्रा निर्गमन (Issue of More Money) - केन्द्रीय बैंक विस्फीति काल में अधिक मात्रा में मुद्रा का निर्गमन करके विस्फीति को दूर कर सकता है। चलन में मुद्रा की मात्रा अधिक आने से लोगों की क्रय-शक्ति बढ़ जाती है और इससे माँग बढ़ जाती है जिससे उत्पादन और रोजगार में वृद्धि हो जाती है। बैंक द्वारा अधिक

मात्रा में मुद्रा निर्गमित की जाती है जिसका अर्थ यह है कि चलन में अधिक मुद्रा आ जाती है तथा कीमत स्तर में क्रमशः वृद्धि होने लगती है।

2) साख नीति में उदारता (Liberal Credit Policy) :- केन्द्रिय बैंक व्यापारिक बैंकों को कम ब्याज दर (बैंक दर घटाकर) उधार देकर अथवा उधार देने की अन्य शर्तें नरम करके व्यापारिक बैंकों को अधिक ऋण लेने के लिये प्रोत्साहित कर सकता है। व्यापारिक बैंक इस प्रकार उधार लिये गये धन को सरल शर्तों पर जनता को उधार दे सकते हैं। इस प्रकार जनता के पास अधिक क्रय-शक्ति पहुँचने से मुद्रा-संकुचन की स्थिति में पर्याप्त सुधार होता है।

3) बैंकिंग विकास को आर्थिक सहायता (Financial Aid for Banking Development) — यदि केन्द्रिय बैंक व्यापारिक बैंकों की शाखा विस्तार या धन के लिए आर्थिक सहायता देने की व्यवस्था करे तो भी देश में साख या उधार का तेजी से विस्तार होने लगेगा और इससे संकुचन की स्थिति का अन्त करने में सहायता मिलेगी।

—x—

The end

Dr. Honey Sinha
(Assistant Professor)
Dept. of Commerce
SNSRKS College, Saharsa